(To be filled by the Candidate)

Class: M·A

Date of Exam: 100318

Year: IInd year

Paper Code: 2403

Paper: Extension Education Technique and Programme

PART - A

BUNDELKHAND UNIVERSITY, JHANSI, U.P.

OMR ANSWER BOOK (40 Pages)

PART - B

(TO BE FILLED BY THE EXAMINER)

SECTION A Q. No.	MARKS	SECTION B Q. No.	MARKS	SECTION C Q. No.	MARKS
1		1		1	
2		2		2	
3		3		3	
4		4		4	
5		5		5	
6	25	6	13	6	
7		7		7	
8		8		8	
9		9		9	
10		10		10	
11		11		11	
12		12		12	
13		13		13	
14		14		14	
15		15		15	
Total		Total		Total	

Total in Words:
Paper Code:
Examiner Name:
Signature of Examiner:
Evaluation Co-Ordinator Remark:

65827769

[Sенction - A]

Attempt any ten questions —

प्रश्नोत्तर संख्या - 4

फ्लैशकार्ड - फ्लैशकार्ड प्रसार शिक्षा में उपयोगी साधन है जिसके द्वारा प्रसारकर्ता अपने विषय वस्तु के बारे में चित्रों के माध्यम से लोगों को बताते हैं।

फ्लैशकार्ड में 10 से 12 कार्डों की श्रृंखला होती है जिसे रेखा, चित्र व कार्टून के माध्यम से बनाया जाता है। इसका आकार 21X27" का होना उपयुक्त होगा।

फ्लैशकार्ड के कार्डों को इस प्रकार से व्यवस्थित किया जाता है जिससे विषय से संबंधित सभी पहलू ~~क्रमबद्ध~~ तरीकों से दर्शकों के सामने आयें। फ्लैशकार्ड के सभी कार्डों को एक मेज पर रख देते है तथा दर्शकों को विषय के अनुसार क्रमबद्ध रूप से दिखाते हैं।

इसमें चित्रों की सहायता से उपयोगी ज्ञान ग्रामीणो तक पहुचाया जाता है तथा चित्र या कार्डो को दिखाते हुए प्रसारकर्ता उसके बारे मे बताता है।

उदाहरण – यदि हमारा विषय वस्तु टी० बी० है तो कार्डो की श्रृंखला इस प्रकार होगी —

- टी० वी० का परिचय
- टी० बी० का बैक्टीरिया
- टी० बी के लक्षण
- कारण
- निवारण
- दवाएं
- आहार आदि।

इन सभी बिंदुओं को चित्रों के आधार पर दिखाएंगे।

प्रश्नोत्तर संख्या – 5

प्रसार शिक्षा [Extension Education]

अर्थ – प्रसार शिक्षा का अर्थ – संस्थाओं से बाहर दी जाने वाली शिक्षा। प्रसार शब्द अंग्रेजी के Extension शब्द से बना हुआ है जो लैटिन भाषा के 'Tensio' शब्द से बना है जहां – 'Ex' का अर्थ – out 'बाहर' 'Tensio' का अर्थ – खींचना या फैलाना है।
अर्थात प्रसार शिक्षा वह शिक्षा है जो व्यक्तियों व वयस्कों को सरकारी संस्थाओं से बाहर दी जाती है।

परिभाषा –

- **लीगन्स के अनुसार** – "प्रसार शिक्षा एक व्यवहारिक विज्ञान है जिसके सिद्धांतो का प्रयोग करके वयस्को तथा युवको की समस्याएं हल की जाती है।"

प्रसार शिक्षा की शुरुआत कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में हुई।

उद्भव – प्रसार शिक्षा 1873 में इंग्लैण्ड में शुरुआत हुई। 1894 में वोरहीस ने सर्वप्रथम 'प्रसार' शब्द का प्रयोग किया।

http://www.upadda.com

निष्कर्ष – उपर्युक्त प्रसार शिक्षा, किसी भी समय, किसी भी को, कहीं भी, किसी के भी द्वारा दी जाने वाली शिक्षा है।

http://www.upadda.com

प्रश्नोत्तर संख्या - 6

टेलीविजन

टेलीविजन, प्रसार कार्य का एक सशक्त माध्यम है जिसके द्वारा संचार कार्य बड़ी तेजी से साथ होता है। टेलीविजन को हिन्दी में "दूरदर्शन" कहते हैं। तथा इनमें महिलाओं, ग्रामीणों, बच्चों व पोषण से संबंधित अन्य कार्यक्रम प्रसारित होते हैं।

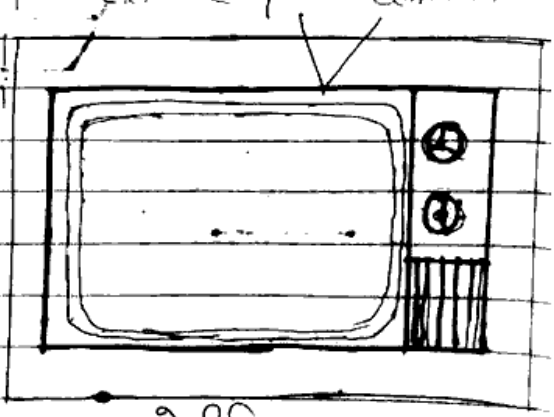

[टेलीविजन]

टेलीविजन का अविष्कार – 1925 में हुआ।
T.V का प्रथम प्रसारण –
1928 में अमेरिका में हुआ।

भारत में पहला प्रसारण ⇒ 15 सितम्बर 1959 को देहली में हुआ

टेलीविजन का प्रसार कार्य के संचार माध्यम में बहुत

अधिक महत्व है। टेलीविज़न में प्रसारित होने वाले निम्न कार्यक्रम है —

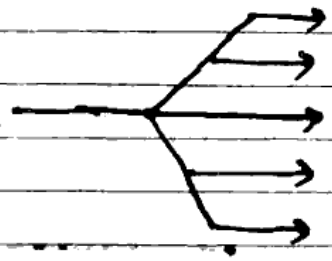

- स्वास्थ्य, पोषण संबंधी
- कृषि संबंधी कार्यक्रम
- पाक- क्रिया।
- घर- आंगन
- गृह- स्वच्छता आदि

निष्कर्ष – टेलीविज़न, प्रसार शिक्षा के संचार माध्यम में सशक्त माध्यम है।

प्रश्नोत्तर संख्या - 2

चार्ट "Chart"

चार्ट में विचारों की श्रृंखला होती है जो लोगों को जागरूक करने में सहायक है। चार्ट में बने जो चित्र व स्लोगन हो वे उद्देश्यपूर्वक होना चाहिए, जिससे प्रसारकर्ता का उद्देश्य पूर्ण हो।

चार्ट के कुछ प्रमुख बिंदु

चार्ट उद्देश्य पूर्ण होना चाहिए।

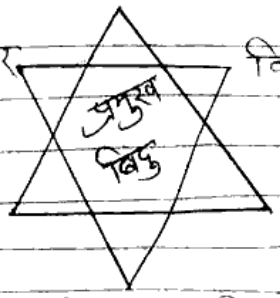

सरल व स्पष्ट विचार

विचारों की उपयुक्त श्रृंखला

उपयुक्त आकार का होना चाहिए

लोगों को जागरुक करने में सहायक हो

रंगों का उचित संयोजन हो।

अर्थात चार्ट में विचारों की श्रृंखला होती है। जो प्रसार कर्ता अपने कार्यक्रम के दौरान चार्ट का प्रयोग करता है।

निष्कर्ष – चार्ट सुनियोजित व व्यवस्थित होना चाहिए, तथा चार्ट विषय-वस्तु से संबंधित विचारों की श्रृंखला है जिससे ग्रामीण जागरूक होते हैं।

प्रश्नोत्तर संख्या-3

पोस्टर [Poster]

http://www.upadda.com

पोस्टर, एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा हम अपने विषय-वस्तु से संबंधित बात को चित्रों के माध्यम से प्रस्तुत करते हैं। पोस्टर हमेशा विषयवस्तु से संबंधित व आकर्षक, उद्देश्यपूर्वक होना चाहिए।

पोस्टर के तीन चरण होते है —

- समस्या
- कारण
- निवारण

'छोटा परिवार'
'सुखी परिवार'
'परिवार नियोजन'

"पोस्टर किसी उद्देश्य को लेकर बनाया जाता है पोस्टर को इतना आकर्षक होना चाहिए जिससे वह अपनी सम्पूर्ण बातो को कह सके।"

http://www.upadda.com

अच्छे पोस्टर बनाना :-

उचित रंगो का संयोजन
विषय वस्तु से संबंधित चित्र
२०×१०" का आकार
उद्देश्य पूर्ण
आकर्षक एवं महत्वपूर्ण आदि।

निष्कर्ष – पोस्टर को उद्देश्यपूर्ण व विषयवस्तु से संबंधित उपयुक्त रंगो से बने चित्रों का चुनाव हो।

प्रश्नोत्तर संख्या – 15

कार्यक्रम नियोजन के चरण

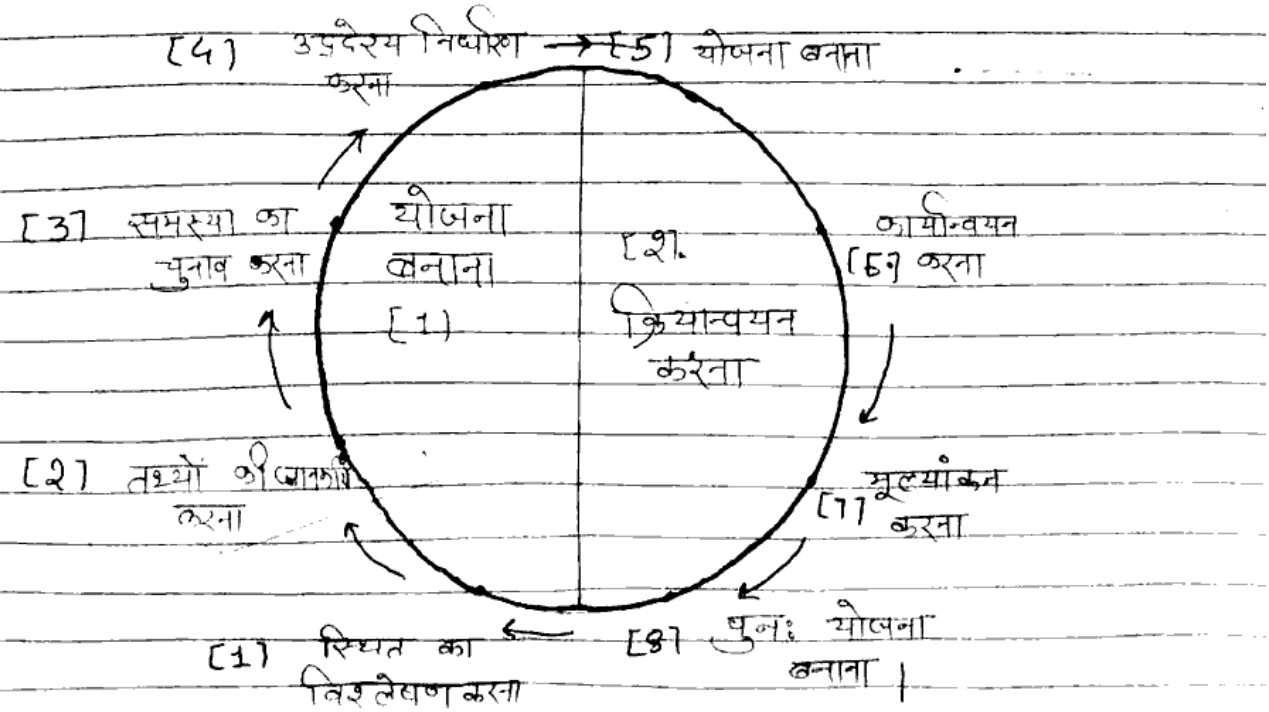

"कार्यक्रम नियोजन की प्रक्रिया के दो चरण है जिनमें से I चरण में चार निर्णय व दूसरे चरण में 4 बिंदु है।"

__निष्कर्ष__ - कार्यक्रम नियोजन से तात्पर्य - कार्यो की श्रृंखला से है जो इच्छित परिणामों तक ले जाता है।

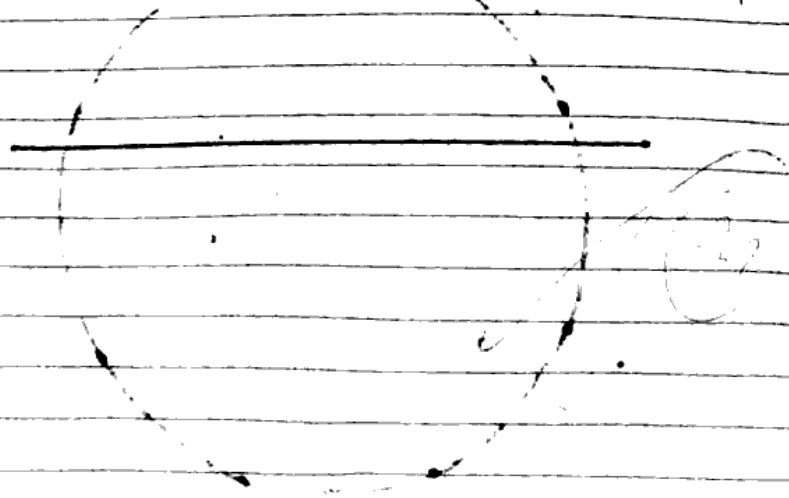

प्रश्नोत्तर संख्या -10

प्रौढ़ द्वारा सीखना

प्रौढ़ शिक्षा से आशय - शिक्षा की वह विधि जिसमें वे व्यक्तियों द्वारा सीखा जाता है जो किसी कारण वश स्कूली शिक्षा न ले पाये हो। प्रौढ़ व्यक्तियों के लिए शिक्षा का अवसर हेतु कार्यक्रम है। प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम सरकार द्वारा बनाया गया है जिसका उद्देश्य सत प्रतिशत साक्षरता लाना है।

"__राष्ट्रीय साक्षरता मिशन__" प्रौढ़ शिक्षा का पहला कार्यक्रम था 1986-87 में 10 लाख लोगो को साक्षर किया गया।

__ए० पी० जे० अब्दुल कलाम के अनुसार__ -

" प्रौढ़ शिक्षा का उद्देश्य सिर्फ लोगो को साक्षर करना ही नही है बल्कि इसके अन्तर्गत लोगो में सामाजिक रूप से भागीदारी लेने के लिए सक्षम बनाना है।"

"अर्थात प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम उन लोगो के लिए बनाया गया है जो किसी कारणवश स्कूली शिक्षा न ले पाये हो, उन लोगो को शिक्षा का अवसर देना है।"

प्रौढ़ तीन प्रकार के है —
- 12 से 18 वर्ष
- 18 से 35 वर्ष
- 35 से ऊपर।

"प्रौढ़ शिक्षा मानव के मस्तिष्क व व्यवहार में परिवर्तन है।"

http://www.upadda.com

प्रश्नोत्तर संख्या -12

प्रसार शिक्षा में समूह चर्चा

प्रसार शिक्षा में समूह शिक्षा चर्चा से तात्पर्य है "जब एक व्यक्ति या समूह किसी अन्य समूह से मिलकर कार्यक्रम से संबंधित चर्चा करता है, समूह चर्चा कहलाता है।"

समूह में चर्चा में कम से कम 20-25 लोग होने चाहिए वहीं समूह कहलायेगा। प्रसारकर्ता जब किसी उद्देश्य से किसी अन्य समूह से मिलता है तो समूह चर्चा कहलाता है।

समूहचर्चा के लाभ —

(1) कार्यक्रम से संबंधित तथ्य जानने में आसानी, लोगो की रुचियों को जानना।
(2) कार्यक्रम के बारे में बताना
(3) अधिक व्यक्तियों तक सूचनाओं का पहुचना
(4) उपयोगी जानकारियां मिलना।
(5)

प्रश्नोत्तर संख्या -13

प्रसार शिक्षा में प्रयुक्त की जाने वाली सामग्री

स्पिसमजर के अनुसार - " प्रसारकर्ता के लिए प्रसार शिक्षण सामग्री उतनी ही आवश्यक हैं जितना कि एक मैकेनिक के लिए रिंच, पेचकश, हथौड़ा आदि।"

सामग्री

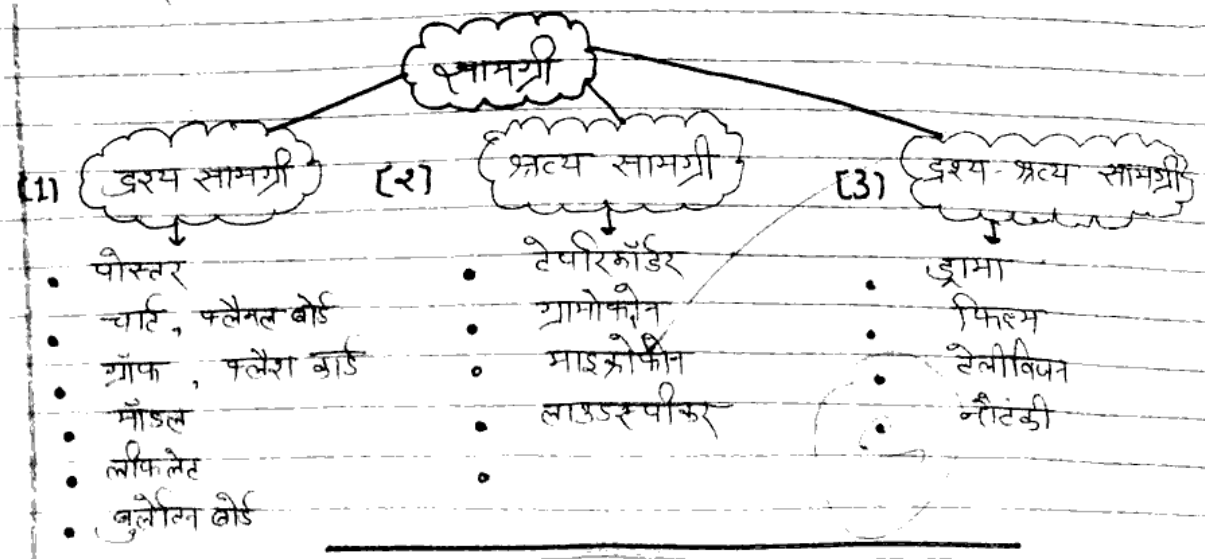

(1) द्रश्य सामग्री
- पोस्टर
- चार्ट, फलैनल बोर्ड
- ग्राफ, फ्लैश कार्ड
- मॉडल
- लीफलेट
- बुलेटिन बोर्ड

(2) श्रव्य सामग्री
- टेपरिकॉर्डर
- ग्रामोफोन
- माइक्रोफोन
- लाउडस्पीकर

(3) द्रश्य-श्रव्य सामग्री
- ड्रामा
- फिल्म
- टेलीविजन
- नौटंकी

प्रश्नोत्तर संख्या - 11

गृहविज्ञान व प्रसार शिक्षा में संबंध

प्रसार शिक्षा से तात्पर्य उपयोगी ज्ञान को विद्यालयों की सीमा से बाहर निकालकर ग्रामीण लोगों तक पहुंचाना हैं जिससे ग्रामीण व्यक्तियों का जीवन स्तर ऊंचा उठ सके।

गृहविज्ञान प्रसार शिक्षा— गृहविज्ञान प्रसार शिक्षा कार्यक्रम विशेषतः गृहणियों व बालिकाओं के लिए हैं जिनका प्रयोग करके महिलाए भी आगे आए—

अर्थात गृहविज्ञान व प्रसारशिक्षा का उद्देश्य एक ही है उपयोगी ज्ञान का फैलाव जिसमें प्रसार शिक्षा - कृषि तकनीकी शिक्षा है व गृहविज्ञान - पोषण कल्याण, पाक कला, आदि से संबंधित कार्यक्रम है।

Section- B

Attempt Any three question —

प्रश्नोत्तर संख्या -1

गृहविज्ञान प्रसार शिक्षा - गृहविज्ञान प्रसार शिक्षा भी एक कार्यक्रम है, जिस प्रकार प्रसार शिक्षा उपयोगी जानकारियों ग्रामीणो तक पहुंचा रही है वैसे ही गृहविज्ञान प्रसार शिक्षा भी उपयोगी जानकारियों लोगो तक पहुचाती है।

" गृहविज्ञान शिक्षा का वह आयाम है जिसके द्वारा उपयोगी जानकारी विध्यालयों से निकलकर उन महिलाओं व बालिकाओं तक पहुंचे जिन्होंने कभी स्कूल का मुंह तक नही देखा तथा उन्हे स्वनिर्भर बनायें।"

गृहविज्ञान प्रसार शिक्षा में महिलाओं व बालिकाओं से संबंधित कार्यक्रम बनाकर ग्रामीणों तक पहुचाना है।

http://www.upadda.com

परिभाषा - "गृहविज्ञान प्रसार शिक्षा में पोषण कार्यक्रम, स्वास्थ्य, टीकाकरण, स्वच्छता, पाक क्रिया आदि का ज्ञान कराना ही, गृहविज्ञान प्रसार शिक्षा है।"

वर्मा के अनुसार - " समय की मांग है कि गृहविज्ञान शिक्षा ग्रामीण मिट्टी से जुड़े तथा लोगो के आत्मन तक पहुंचे।"

चन्द्रा के अनुसार - "गृहविज्ञान प्रसार शिक्षा संस्थाओं से बाहर निकलकर ग्रामीण क्षेत्रो में आये जिन्होने कभी कोई औपचारिक शिक्षा नहीं ली है, जिससे बालिकाओं व महिलाओं का विकास हो।"

http://www.upadda.com

" गृहविज्ञान प्रसार शिक्षा ग्रामीण महिलाओं व बालिकाओं के व्यवहार, मनोवृत्तियों, कार्य करने के तरीको आदि में परिवर्तन लाना इसका उद्देश्य है।"

गृहविज्ञान का उदय –

अमेरिका में 1900 से गृहविज्ञान को Domestic Economics (घरेलू अर्थशास्त्र) के रूप में पढ़ाने की शुरुआत हुई।

ब्रिटेन में "Domestic Science" के नाम से पढ़ाया गया।

भारत में दोनों का मिला जुला रूप गृह विज्ञान के नाम से पढ़ाया जाने लगा। Home Science

गृहविज्ञान के सिद्धांत –

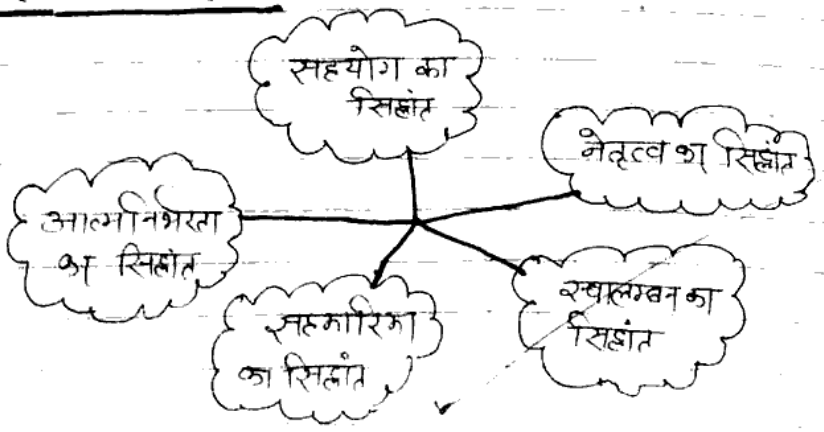

गृहविज्ञान प्रसार शिक्षा के उद्देश्य

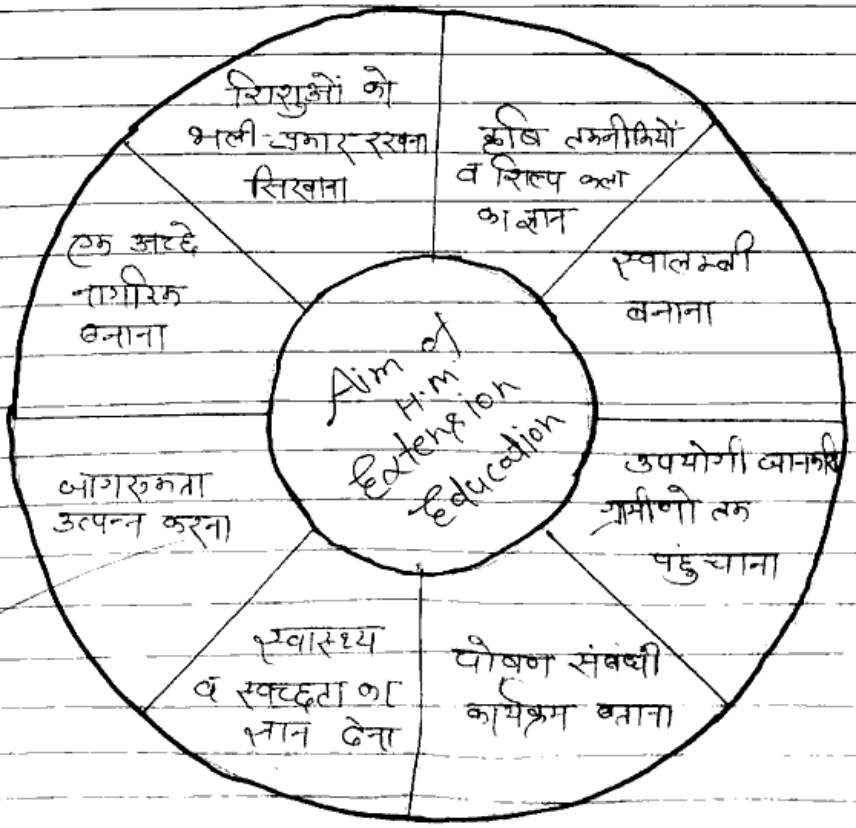

गृहविज्ञान - [दर्शन]

दर्शन शब्द ग्रीक भाषा के दो शब्दो से बना है -

(i) Philos - ज्ञान
(ii) Sophia - अनुराग

अर्थात दर्शन ज्ञान के द्वारा कुछ सीखने ही दर्शन कहलाता है। हर व्यक्ति के कुछ न कुछ दर्शन अवश्य होते हैं वही दर्शन व्यक्ति को निर्णय लेने के योग्य बनाते है।

दर्शन, वास्तव में क्या है? और क्या होना चाहिए - इन दोनो बातो के मध्य अंतर करना ही दर्शन कहलाता है।

दर्शन का महत्व - [1] व्यक्ति की मनोवृत्ति में परिवर्तन।
↓
[2] व्यवहार में परिवर्तन।
↓
[3] कार्य करने के तरीके मे परिवर्तन।

निष्कर्ष -

" अर्थात, गृहविज्ञान उच्चशिक्षा का ग्रामीण महिलाओं व बालिकाओं के लिए अत्यंत महत्व है क्योंकि इसका ज्ञान पाकर खुद को स्वनिर्भर बना सकती हैं।"

http://www.upadda.com

प्रश्नोत्तर संख्या - 3

सामुदायिक विकास कार्यक्रम

सामुदायिक विकास कार्यक्रम दो शब्दो से मिलकर बना हुआ है — समुदाय + विकास। जहाँ समुदाय का अर्थ है — "एक भौगोलिक स्थित में रहने वाले व्यक्तियों के खान-पान, पहनावा, संस्कृति, धर्म सभी में समानता हो, समुदाय कहलाता है।"

विकास — समुदाय के व्यक्तियों का आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक हर पहलू में उन्हें मजबूत बनाना ही विकास है।

http://www.upadda.com

टेलर के अनुसार — "स्वतंत्रता के पश्चात भारत की हालत इतनी दयनीय थी कि लोग भूखे, बेरोजगार व कुपोषित हालत में थे जहाँ 800 भाषाओं का प्रचलन था वहाँ की स्थित सुधारने हेतु सरकार ने एक कार्यक्रम चलाने की सोची जिससे ग्रामीणों का विकास, व जीवन स्तर ऊँचा उठ सके।"

सामुदायिक विकास कार्यक्रम की स्थापना — सामुदायिक विकास कार्यक्रम की स्थापना 2 अक्टूबर 1952 में हुई। जिसका उद्देश्य ग्रामीण जीवन स्तर को ऊँचा उठाना था।

परिभाषाएं —

(1) **योजना आयोग के अनुसार** — "सामुदायिक विकास योजना स्वप्रयासों द्वारा नवीन विधि का खोज करके ग्रामीणों को आर्थिक, सामाजिक रूप से जीवन स्तर में परिवर्तन लाना है।"

(2) **देसाई के अनुसार** — "सामुदायिक विकास योजना में प्रथम पंचवर्षीय योजना के अंतर्गत ग्रामीण व्यक्तियों को सामाजिक, सांस्कृतिक व आर्थिक रूप से सहायता देकर स्वनिर्भर बनाना है।"

योजना आयोग का अध्यक्ष — देश का प्रधानमंत्री होता है।

सामुदायिक विकास योजना के अंतर्गत चलाये जा रहे कार्यक्रम —

सामुदायिक विकास योजना ग्रामीणो के उत्थान के लिए बनाई गई रही हैं इसका उद्देश्य ग्रामीणो को स्वनिर्भर बनाना हैं कुछ मुख्य कार्यक्रम —

[1] DWCRA - Dovelopment of Women's Children's rural areas.

[2] ICDS - Intigrated children development service.

[3] GKY - Ganga kalyan yojna

About of ICDS - एकीकृत ग्रामीण बालविकास कार्यक्रम, सामुदायिक विकास योजना का एक कार्यक्रम हैं जिसके द्वारा ग्रामीण बालको के विकास पर ध्यान दिया गया हैं।

DWCRA- Dovelopment of Women's Children's rural areas.

महिला एवं बाल विकास ग्रामीण कार्यक्रम सामुदायिक विकास योजना के द्वारा बनाया गया कार्यक्रम हैं इसको संक्षिप्त में 'ग्राम सेविका' के नाम से भी जानते हैं। इसका उद्देश्य मात एवं शिशु कल्याण कार्यक्रम हैं।

इस कार्यक्रम में ५ विलास के लिए ५ ग्रामों का एक समूह बनाते हैं, जिसके लिए एक ग्राम सेविका का चुनाव करते हैं।

उद्देश्य - स्वस्थ मात व शिशु का ज्ञान देना

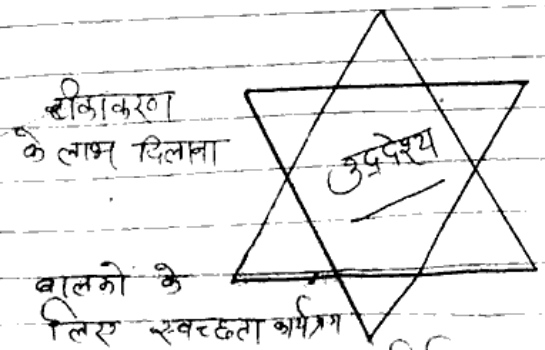

1- **पोषण संबंधी जानकारी** – ग्राम सेविका, महिलाओं को पोषण संबंधी कार्यक्रम के बारे में बताती है व समय-समय पर सरकार द्वारा सामान भी बंटवाया जाता है।

2- **समय-समय पर टीकाकरण** – शिशुओं के लिए निःशुल्क टीकाकरण की व्यवस्था है व सचल अस्पताल की भी व्यवस्था उपलब्ध कर दी गई है।

3- **शिशु मृत्यु दर कम करना** – माताओं एवं शिशुओं को गर्भावस्था व आहार से संबंधित बातें बताकर शिशु मृत्यु दर को कम करना।

4- **ग्रामीणों का विकास** – ग्रामीणों को स्वनिर्भर व स्वालम्बन का पाठ पढ़ाना जिससे वह अपने पैरों में खड़ी हो सकें।

निष्कर्ष – " अर्थात सामुदायिक विकास योजना ग्रामीणों के उत्थान के लिए बनाया गया है। "

http://www.upadda.com

प्रश्नोत्तर संख्या -6

योजना और मूल्यांकन [कार्यक्रम]

कार्यक्रम – किसी भी सरकारी संस्थान व गैर सरकारी संस्थान द्वारा लोगो के विकास के लिए कुछ व्यवस्थाएं बनाई जाती है जो, कार्यक्रम कहलाते हैं।

अर्थात बहुत सारे बिंदुओं को जोड़कर एक कार्यक्रम बनाया जाता है जिसका उद्देश्य व्यक्ति का सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक व शैक्षिक विकास करना है।

कार्यक्रम के उद्देश्य –

- लोगो के जीवन स्तर को ऊंचा उठाना
- स्वालम्बी बनाना
- शैक्षिक स्तर में सुधार
- उपयोगी ज्ञान को लोगो तक पहुंचाना है।
- आवश्यक सूचनाओं का प्रसारण करना।

http://www.upadda.com

योजना Planning -

किसी भी कार्य को करने के लिए योजना बनाना अत्यंत आवश्यक है क्योंकि बिना योजना बनाए हम कार्यक्रम के उद्देश्य तक पहुंच ही नहीं सकते।

बिना योजना बनाये कार्यक्रम उस भांति होगा जैसे — "बिना नक्शे के भवन निर्माण"

परिभाषाएं -

"योजना कार्यों की शृंखला है जिसके द्वारा निश्चित परिणाम तक पहुंच सकते हैं।"
[हर्टि के अनुसार]

निकिल एवं डार्सी के अनुसार -

"योजना एक मौसिक प्रक्रिया है जिसके द्वारा हम अपने उद्देश्यों तक पहुंच सकते हैं।"

योजना के चरण

(1) योजना बनाना
- तथ्यों की जानकारी करना
- स्थिति का विश्लेषण करना
- समस्या का चुनाव
- योजना बनाना

कार्यान्वयन करना
- उद्देश्य का निर्धारण
- कार्यान्वयन करना
- मूल्यांकन करना
- पुनर्विचार करना

कार्यक्रम में मूल्यांकन

कार्यक्रम में जितना ही महत्व नियोजन या आयोजन का है उतना ही महत्व मूल्यांकन का है क्योंकि मूल्यांकन कार्यक्रम के पुनर्योजना बनाने में सहायक है।

"मूल्यांकन में भूत की प्रक्रियाओं से लेकर भविष्य तक गहरी दृष्टि रखी जाती है।"

परिभाषा -

"मूल्यांकन आयोजन, संगठन, नियंत्रण सभी प्रक्रिया पर गहन अध्ययन करके किसी निष्कर्ष तक पहुंचती है जिससे भविष्य के परिणामों तक पहुंचने में सहायक है।"

मूल्यांकन के प्रकार

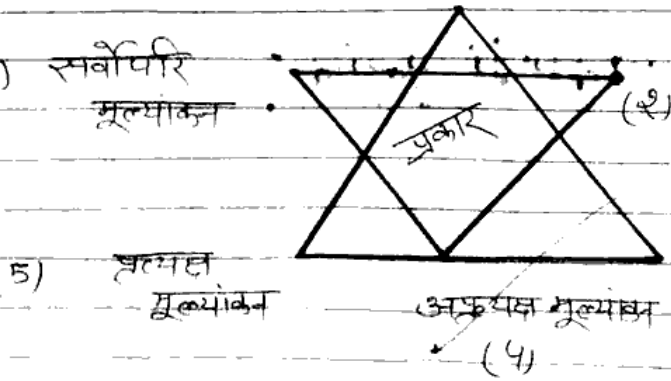

मूल्यांकन का महत्व

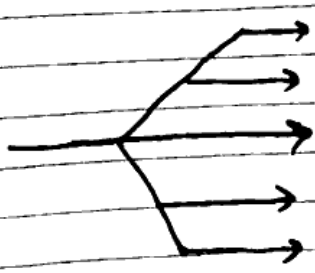

- भविष्य के लिए योजना बनाने में सहायक।
- हमारा उद्देश्य किस स्तर तक पहुंचा।
- कार्यक्रम में क्या कमियां थी।
- कार्यक्रम का व्यक्ति पर कितना प्रभाव पड़ा।
- लोगों द्वारा क्या सहभागिताएं की गई।
- लाभकारी हुआ या क्या-2 अच्छाई थी आदि।

निष्कर्ष - "अर्थात कार्यक्रम में मूल्यांकन और आयोजन का बहुत अधिक महत्व है क्योंकि बिना आयोजन के कार्यक्रम - बिना नक्शे के भवन निर्माण के समान ही होगा।"